प्राक्कथन

सृष्टि में जो भी मूर्त एवं अमूर्त है वह सभी कुछ परिवेश का ही परिणाम है। परिवेश ही सम्पूर्ण जीवन का निर्माता एवं नियामक तत्त्व है। साहित्य मानव जीवन की प्रतिच्छाया है। इसलिए साहित्य में परिवेश का अंतर्निहित होना अवश्यंभावी है। कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य की लोकप्रियता का कारण उनके साहित्य का समकालीन परिवेश से अत्यधिक जुडाव ही है। आलोचक एवं साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी स्वीकार किया है कि साहित्य जतना की चित्तवृत्तियों का ही संचित प्रतिबिंब होता है। जैसे-जैसे परिवेश में बदलाव होता ह वैसे-वैसे जनता की चित्तवृत्तियाँ भी बदलने लगती हैं और उसके साथ साहित्य का रूप भी परिवर्तित हो जाता है। निस्संदेह परिवेश और साहित्य में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। पंजाब के हिन्दी उपन्यासों के प्रति मेरी रुचि हमेशा से रही है। इसीलिए शोध के संदर्भ में जब विषय-चयन का प्रश्न उभरा तो सर्वप्रथम मेरे मन-मस्तिष्क में पंजाब प्रदेश के वर्तमान उपन्यासकार अजय शर्मा का नाम अनायास ही आ गया, जिनकी औपन्यासिक कृतियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। वर्तमान परिवेश से सम्बन्धित इनके उपन्यास-साहित्य ने मुझे समकालीन परिवेश के दृष्टिकोण से शोध-कार्य हेतु प्रेरित किया। मेरे निर्देशक प्रो. मुकेश अरोड़ा जी ने मेरी रुचि जानने के पश्चात् ही मुझे इस विषय पर कार्य हेतु प्रेरित किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सुव्यवस्थित रूप देने हेतु इसे आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। **प्रथम अध्याय** 'भूमिका' के अंतर्गत विषय कथन, सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, शोध का परिसीमन एवं शोध का महत्त्व इत्यादि को प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'समकालीन परिवेश : सैद्धांतिक विवेचन' है, जिसमें समकालीन एवं परिवेश के कोशगत अर्थ एवं परिभाषाओं को स्पष्ट किया गया है। साहित्य एवं परिवेश सम्बन्ध को प्रस्तुत करते हुए परिवेश : विविध आयाम के अंतर्गत सामाजिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिवेश का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय 'अजय शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में अजय शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय दिया गया है। प्रस्तुत अध्याय में इनके जन्म, शिक्षा, पारिवारिक परिवेश, व्यवसाय, व्यक्तित्व के नियामक एवं प्रेरणास्रोतों को प्रस्तुत करते हुए इनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'अजय शर्मा के उपन्यासों का सामाजिक परिवेश' है। प्रस्तुत अध्याय में इनके उपन्यासों में वर्णित पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिवेश से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं, विस्थापन की समस्या एवं समाज एवं नारी जीवन आदि विषयों को अध्ययन का विषय बनाया गया है।

पंचम अध्याय 'अजय शर्मा के उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश' में राजनीतिक षड्यंत्र, युद्धों की विभीषिका : एक राजनीतिक समस्या, भ्रष्ट प्रशासन एवं वर्तमान समय में राजनीति एवं मीडिया के संबंध आदि विषयों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिवेश के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

षष्टम अध्याय 'अजय शर्मा के उपन्यासों में आर्थिक परिवेश' से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्याय में अर्थ आधारित वर्तमान जीवन-पद्धति एवं शोषण के विभिन्न कुचक्रों को आर्थिक परिवेश के विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

सप्तम अध्याय 'अजय शर्मा के उपन्यासों में सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश' है। इसमें सांस्कृतिक परिवेश एवं धार्मिक परिवेश दो प्रमुख आधारों के अंतर्गत विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से अजय शर्मा के उपन्यासों का विश्लेषण किया गया है।

अष्टम अध्याय 'उपसंहार' में शोध का सारांश, शोध निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ तथा भावी शोध संकेत दिए गए हैं।

अंत में 'परिशिष्ट' के अंतर्गत आधार ग्रंथ सूची, सहायक ग्रंथ सूची, लघु शोध-प्रबंध (एम. फिल.), शब्द-कोश एवं पत्र पत्रिकाओं इत्यादि को सूचीबद्ध किया गया ह।

प्रारम्भ से अंत तक, शोध विषय की रूपरेखा से लेकर उपसंहार तक प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सम्पूर्ण रूप देने में मेरे गुरुवर प्रो. मुकेश अरोड़ा जी का अपार स्नेह एवं परिश्रम रहा है। उन्हीं के निर्देशन रूपी आशीर्वाद से ही मैं प्रस्तुत शोध-कार्य को सम्पूर्ण कर पाया हूँ। मैं हृदय से उनकी जीवन भर आभारी रहूँगी। अजय शर्मा के लिए भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके कुशल परामर्श से हमेशा अनुसंधान में सहयोग मिला। हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ एवं हिन्दी विभाग, सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना के प्रवक्ताआं प्रो. नीरजा सूद, प्रो. बैजनाथ प्रसाद, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. सत्यपाल सहगल, डॉ. गुरमीत सिंह, प्रो. हरदीप सिंह एवं प्रो. राजेन्द्र जैन द्वारा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मिलने वाले सहयोग के लिए हृदय से आभार ज्ञापित करती हूँ। मैं स्वर्गीय डॉ. सतीश कांत (हिन्दी विभाग, सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना) एवं डॉ. नरिन्दर सन्धू (प्रधानाचार्या, रामगढ़िया कन्या महाविद्यालय, लुधियाना) की आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे पी-एच. डी. हेतु प्रोत्साहित किया। डॉ. नीरू (सांध्यकालीन हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय), अस्सिटेंट प्रोफसर संगम वर्मा (हिन्दी विभाग, सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना) की भी विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अजय शर्मा के उपन्यासों पर शोध-कार्य हेतु प्रोत्साहित किया। मैं हिन्दी-विभाग एवं अन्य पुस्तकालयों एवं उनके अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा समय-समय पर मिलने वाले सहयोग के लिए भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। साथ ही उन सभी चिन्तकों एवं लेखकों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके विचारों और चिन्तन ने मेरे शोध-कार्य को पोषित किया।

मैं अपनी स्वर्गीय दादी श्रीमती शांति देवी की हमेशा कृतज्ञ रहूँगी, जिन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य में आगे बढ़ने का स्वप्न दिया था। मैं अपने पिताजी श्री मोहन लाल, माता श्रीमती संतोष रानी, भाई तरुण कुमार, बहनों (मंगला एवं अंजु) जीजा जी (श्री मुकेश धवन तथा श्री मुनीश नंदा) भानजा-भानजी (इशिता, पीयूष, जक्श) के स्नेह,

अपनत्व एवं सहयाग के लिए भी कृतज्ञ हूँ। हिन्दी-विभाग के शोधार्थी सौरभ कुमार, मुनीश कुमार, नरेन्द्र, जीतू, तजिंदर भाटिया, प्रीतू एवं अन्य विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी नवनीत कौर, आज्ञापाल कौर और जगदीप कौर का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। अंततः मैं नतमस्तक हो कर सर्वाधिक धन्यवाद सृष्टि के पालनकर्त्ता ईश्वर का करती हूँ, जिनके आशीर्वाद से शोध-प्रबंध सम्पन्न हो पाया।

शोधार्था

कंचन